हकृवि ने दाना मटर की दो उन्नत किस्मों के उत्पादन एवं बिक्री के लिए निजी कंपनी से किया करार

नभ-छोर न्यूज ⏭ 11 नवंबर



हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की जा रही उन्नत किस्मों के बीजों की मांग देशभर में लगातार बढ़ रही है। इसी कड़ी में मैजेस्टिक इम्पेक्स, गुवाहाटी (असम) ने दाना मटर की दो उन्नत किस्मों एचएफपी-1426 और एचएफपी-1709 के उत्पादन एवं बिक्री के लिए विश्वविद्यालय के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने बताया कि उन्नत किस्मों के बीजों की बुवाई से किसानों की उत्पादकता और आय में वृद्धि होगी। देश में खाद्यान्न उत्पादन बढ़ाने और किसानों को बेहतर बीज उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से निजी क्षेत्र की कंपनियों के साथ निरंतर समझौता ज्ञापन किए जा रहे हैं। मैजेस्टिक इम्पेक्स, गुवाहाटी के एग्जीक्यूटिव मेंबर नीरज अग्रवाल तथा विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

एचएफपी-1426 की खासियत

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि एचएफपी-1426 दाना मटर की अधिक उपज देने वाली, रोग प्रतिरोधी और शीघ्र पकने वाली उन्नत किस्म है। यह उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र की परिस्थितियों में 120 से 122 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसके पौधों की ऊंचाई लगभग 62 सेंटीमीटर होने के कारण फसल के गिरने की आशंका कम रहती है। इसके अतिरिक्त, यह किस्म फलियों के चटकने के प्रति भी प्रतिरोधी है। यह किस्म उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र में रबी मौसम के दौरान सामान्य समय पर बुवाई के लिए तथा सिंचित परिस्थितियों में अनुशंसित कृषि पद्धतियों के अनुसार खेती के लिए उपयुक्त है। इसकी औसत उपज 17 से 18 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है, जबकि अनुकूल परिस्थितियों और उचित फसल प्रबंधन के अंतर्गत इसकी अधिकतम उपज क्षमता 28 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक है।

एचएफपी-1709 की विशेषता

मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. नरेश कौशिक ने बताया कि विमोचन के प्रथम वर्ष में ही एचएफपी 1709 ने किसानों के बीच लोकप्रियता हासिल की और रबी 2026-27 के लिए राष्ट्रीय डीएसी-बीएसपी बीज मांग-पत्र (इंडेंट) में 133.88 क्विंटल की मांग के साथ देश में प्रथम स्थान प्राप्त किया। यह उपलब्धि इस किस्म की बढ़ती लोकप्रियता तथा किसानों द्वारा इसकी स्वीकार्यता को दर्शाती है। एचएफपी-1709 उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र के लिए विकसित दाना मटर की अधिक उपज देने वाली, रोग प्रतिरोधी और शीघ्र पकने वाली उन्नत किस्म है। यह 112 से 115 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इस अवसर पर डॉ. अतुल ढींगड़ा, डॉ. रमेश गोयल, डॉ. एसके पाहुजा, डॉ. एसके तेहलान, डॉ. संदीप आर्य, डॉ. विरेन्द्र मोर, डॉ. योगेश जिंदल, डॉ. अनुराग व डॉ. पवन उपस्थित रहे।

मटर की दो उन्नत किस्मों के उत्पादन और बिक्री के लिए हकृवि ने किया निजी कंपनी से करार

एचएफपी-1426 और एचएफपी-1709 किस्मों के बीज देशभर में होंगे उपलब्ध, 30 क्विंटल प्रति हेक्टेयर पैदावार

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हकृवि) के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित दाना मटर की दो उन्नत किस्मों के बीज अब निजी कंपनी के माध्यम से किसानों को उपलब्ध होंगे। इसके लिए असम के गुवाहाटी स्थित मैजेस्टिक इम्पेक्स ने विश्वविद्यालय के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। समझौते के तहत एचएफपी-1426 और एचएफपी-1709 किस्मों के बीजों का उत्पादन और बिक्री की जाएगी।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने बताया कि विश्वविद्यालय की उन्नत किस्मों के बीजों की मांग देशभर में लगातार बढ़ रही है। निजी कंपनियों के साथ समझौते करने का उद्देश्य किसानों



तक बेहतर गुणवत्ता वाले बीज पहुंचाना, फसल उत्पादकता बढ़ाना और उनकी आय में वृद्धि करना है। समझौते पर मैजेस्टिक इम्पेक्स के एग्जीक्यूटिव मेंबर नीरज अग्रवाल और विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने हस्ताक्षर किए।

112 से 122 दिन में तैयार होंगी दोनों किस्में : अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि एचएफपी-1426 दाना मटर की अधिक उपज देने वाली, रोग प्रतिरोधी और शीघ्र पकने वाली किस्म है। यह 120 से 122 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। पौधों की ऊंचाई करीब 62 सेंटीमीटर होने के कारण फसल गिरने की आशंका कम रहती है। यह फलियों के चटकने के प्रति भी प्रतिरोधी है। इसकी औसत उपज 17 से 18 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है, जबकि अनुकूल परिस्थितियों में 28 क्विंटल तक उत्पादन लिया जा सकता है। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. रमेश गोयल, डॉ. एसके पाहुजा, डॉ. एसके तेहलान, डॉ. संदीप आर्य आदि उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय बीज मांग में एचएफपी-1709 पहले स्थान पर

मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. नरेश कौशिक ने बताया कि एचएफपी-1709 ने विमोचन के पहले ही वर्ष किसानों के बीच लोकप्रियता हासिल की है। रबी 2026-27 के लिए राष्ट्रीय डीएसी-बीएसपी बीज मांग-पत्र में 133.88 क्विंटल की मांग के साथ इस किस्म ने देश में पहला स्थान प्राप्त किया है। यह किस्म 112 से 115 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसके पौधों की ऊंचाई 53 से 63 सेंटीमीटर है, जिससे फसल गिरने की संभावना कम रहती है। यह भी रोग प्रतिरोधी और फलियों के चटकने के प्रति प्रतिरोधी है। इसकी औसत उपज करीब 17 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है, जबकि अनुकूल परिस्थितियों में 30 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक उत्पादन क्षमता है। दोनों किस्में उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र में रबी मौसम के दौरान सामान्य समय पर बुवाई और सिंचित परिस्थितियों में खेती के लिए अनुशंसित हैं।

करार

मटर की दो उन्नत किस्मों के बीज उत्पादन व बिक्री के लिए एचएयू का कंपनी से करार

असम की मैजेस्टिक इम्पेक्स करेगी एचएफपी-1426 और एचएफपी-1709 किस्मों का उत्पादन व बिक्री

हिसार, 11 नवंबर (सच कहूँ/मुकेश)। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) की दाना मटर की दो उन्नत किस्मों के बीज अब निजी कंपनी के माध्यम से किसानों को उपलब्ध होंगे। विश्वविद्यालय ने असम की मैजेस्टिक इम्पेक्स के साथ एचएफपी-1426 और एचएफपी-1709 के बीज उत्पादन एवं बिक्री के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।



हिसार। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज के साथ कंपनी प्रतिनिधि व विश्वविद्यालय के अधिकारी।

कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने बताया कि उन्नत किस्मों के बीजों से किसानों की उत्पादकता और आय बढ़ाने के उद्देश्य से निजी कंपनियों के साथ समझौते किए जा रहे हैं। समझौते पर कंपनी के एग्जीक्यूटिव मेंबर नीरज अग्रवाल और विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने हस्ताक्षर किए।

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि एचएफपी-1426 रोग प्रतिरोधी और शीघ्र पकने वाली किस्म है। यह 120 से 122 दिनों में तैयार होती है और इसकी औसत उपज 17 से 18 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। अनुकूल परिस्थितियों में इसकी उपज 28 क्विंटल तक पहुंच सकती है। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. नरेश कौशिक ने बताया कि एचएफपी-1709 ने विमोचन के पहले वर्ष में ही रबी 2026-27 के राष्ट्रीय डीएसी-बीएसपी बीज मांग-पत्र में 133.88 क्विंटल की मांग के साथ देश में पहला स्थान हासिल किया है। यह किस्म 112 से 115 दिनों में पकती है। इसकी औसत उपज 17 क्विंटल और अधिकतम उपज क्षमता 30 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, डॉ. रमेश गोयल, डॉ. एसके पाहुजा, डॉ. एसके तेहलान, डॉ. संदीप आर्य, डॉ. विरेन्द्र मोर, डॉ. योगेश जिंदल, डॉ. अनुराग व डॉ. पवन उपस्थित रहे।

दाना मटर की दो उन्नत किस्मों के उत्पादन एवं बिक्री के लिए निजी कंपनी ने हकृवि से किया समझौता

-पाठकपक्ष न्यूज-

हिसार, 12 नवम्बर : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की जा रही उन्नत किस्मों के बीजों की मांग देशभर में लगातार बढ़ रही है। इन किस्मों के बीजों की बढ़ती मांग को देखते हुए निजी क्षेत्र की कंपनियां भी विश्वविद्यालय के साथ समझौते कर रही हैं। इसी कड़ी में मैजेस्टिक इम्पेक्स, गुवाहाटी (असम) ने दाना मटर की दो उन्नत किस्मों एचएफपी-1426 और एचएफपी-1709 के उत्पादन एवं बिक्री के लिए विश्वविद्यालय के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। यह जानकारी देते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने बताया कि उन्नत किस्मों के बीजों की बुवाई से किसानों की उत्पादकता और आय में वृद्धि होगी। देश में खाद्यान्न उत्पादन बढ़ाने और किसानों को बेहतर बीज उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से निजी क्षेत्र की कंपनियों के साथ निरंतर समझौता ज्ञापन किए जा रहे हैं। मैजेस्टिक इम्पेक्स, गुवाहाटी के एग्जीक्यूटिव मेंबर नीरज अग्रवाल तथा विश्वविद्यालय के



अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

एचएफपी-1426 की खासियत

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि एचएफपी-1426 दाना मटर की अधिक उपज देने वाली, रोग प्रतिरोधी और शीघ्र पकने वाली उन्नत किस्म है। यह उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र की परिस्थितियों में 120 से 122 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसके पौधों की ऊंचाई लगभग 62 सेंटीमीटर होने के कारण फसल के गिरने की आशंका कम रहती है। इसके अतिरिक्त, यह किस्म फलियों के चटकने के प्रति भी प्रतिरोधी है। यह किस्म उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र में रबी मौसम के दौरान सामान्य समय पर बुवाई के लिए तथा सिंचित परिस्थितियों में अनुशंसित कृषि पद्धतियों के अनुसार खेती के लिए उपयुक्त है। इसकी औसत उपज 17 से 18 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है, जबकि अनुकूल परिस्थितियों और उचित फसल प्रबंधन के अंतर्गत इसकी अधिकतम उपज क्षमता 28 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक है।

एचएफपी-1709 की विशेषता

मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. नरेश कौशिक ने बताया कि विमोचन के प्रथम वर्ष में ही एचएफपी 1709 ने किसानों के बीच लोकप्रियता हासिल की और रबी 2026-27 के लिए राष्ट्रीय डीएसी-बीएसपी बीज मांग-पत्र (इंडेंट) में 133.88 क्विंटल की मांग के साथ देश में प्रथम स्थान प्राप्त किया। यह उपलब्धि इस किस्म की बढ़ती लोकप्रियता तथा किसानों द्वारा इसकी स्वीकार्यता को दर्शाती है।

एचएफपी-1709 उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र के लिए विकसित दाना मटर की अधिक उपज देने वाली, रोग प्रतिरोधी और शीघ्र पकने वाली उन्नत किस्म है। यह 112 से 115 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसके पौधों की ऊंचाई लगभग 53 से 63 सेंटीमीटर होने के कारण फसल के गिरने की आशंका कम रहती है। यह किस्म भी फलियों के चटकने के प्रति प्रतिरोधी है। यह किस्म उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र में रबी मौसम के दौरान सामान्य समय पर बुवाई तथा सिंचित परिस्थितियों में अनुशंसित कृषि पद्धतियों के अनुसार खेती के लिए उपयुक्त है। इसकी औसत उपज लगभग 17 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है, जबकि अनुकूल परिस्थितियों और उचित फसल प्रबंधन के अंतर्गत इसकी अधिकतम संभावित उपज 30 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक हो सकती है।

इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. रमेश गोयल, डॉ. एसके पाहुजा, डॉ. एसके तेहलान, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, डॉ. विरेन्द्र मोर, डॉ. योगेश जिंदल, डॉ. अनुराग व डॉ. पवन उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार,
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	12-11-26	5	1-6

समझौता • एचएयू ने गुवाहाटी की कंपनी के साथ उत्पादन और बीज बिक्री के लिए एमओयू पर किए हस्ताक्षर

एचएयू ने तैयार की मटर की एचएफपी-1426 व 1709 किस्में

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की जा रही उन्नत किस्मों के बीजों की मांग देशभर में बढ़ रही है। इन किस्मों के बीजों की बढ़ती मांग को देखते हुए निजी क्षेत्र की कंपनियां भी विश्वविद्यालय के साथ समझौते कर रही हैं। इसी कड़ी में मैजेस्टिक इम्पेक्स, गुवाहाटी असम ने दाना मटर की दो उन्नत किस्मों एचएफपी-1426 और एचएफपी-1709 के उत्पादन एवं बिक्री के लिए विश्वविद्यालय के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।

मैजेस्टिक इम्पेक्स, गुवाहाटी के एग्जीक्यूटिव मेंबर नीरज अग्रवाल तथा विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. रमेश गोयल, डॉ. एस्के पाहुजा, डॉ. एसके तेहलान, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, डॉ. विरेन्द्र मोर, डॉ. योगेश जिंदल, डॉ. अनुराग व डॉ. पवन उपस्थित रहे।



एचएयू कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज के साथ कंपनी प्रतिनिधि व अधिकारी।

एचएफपी-1709 की विशेषता : लगभग 17 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज होती है, 30 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक संभव, कम दिनों में देगी बंपर पैदावार

एचएयू मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. नरेश कौशिक ने बताया कि एचएफपी 1709 की औसत उपज लगभग 17 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है, जबकि अनुकूल परिस्थितियों और उचित फसल प्रबंधन के अंतर्गत इसकी अधिकतम संभावित उपज 30 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक हो सकती है। यह उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र के लिए विकसित दाना मटर की अधिक उपज देने वाली, रोग प्रतिरोधी और शीघ्र पकने वाली उन्नत किस्म है। यह 112 से 115 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसके पौधों की ऊंचाई लगभग 53 से 63 सेंटीमीटर होने के कारण फसल के गिरने की आशंका कम रहती है। यह किस्म भी फलियों के चटकने के प्रति प्रतिरोधी है। यह किस्म उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र में रबी मौसम के दौरान सामान्य समय पर बुवाई तथा सिंचित परिस्थितियों में अनुशंसित कृषि पद्धतियों के अनुसार खेती के लिए उपयुक्त है।

एचएफपी-1426 : रोग प्रतिरोधी और 120 से 122 दिनों में पकने वाली उन्नत किस्म

एचएयू अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि एचएफपी-1426 दाना मटर की अधिक उपज देने वाली, रोग प्रतिरोधी और शीघ्र पकने वाली उन्नत किस्म है। यह उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र की परिस्थितियों में 120 से 122 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसके पौधों की ऊंचाई लगभग 62 सेंटीमीटर होने के कारण फसल के गिरने की आशंका कम रहती है। यह किस्म फलियों के चटकने के प्रति भी प्रतिरोधी है। यह किस्म उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र में रबी मौसम के दौरान सामान्य समय पर बुवाई के लिए उपयुक्त है। इसकी औसत उपज 17 से 18 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है, जबकि अनुकूल परिस्थितियों और उचित फसल प्रबंधन से अधिकतम उपज क्षमता 28 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक है।

एचएयू ने मैजेस्टिक इम्पेक्स, गुवाहाटी असम से दाना मटर की दो उन्नत किस्मों एचएफपी-1426 और एचएफपी-1709 के उत्पादन एवं बिक्री के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। उन्नत किस्मों के बीजों की बुवाई से किसानों की उत्पादकता और आय में वृद्धि होगी।
- प्रो. बीआर काम्बोज, कुलपति, एचएयू।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	12-11-26	2	1-4

प्रक्रिया

एचएयू ने उत्पादन-बिक्री के लिए असम की कंपनी से किया समझौता, दोनों किस्में रोग प्रतिरोधी और शीघ्र पकने वाली

दो उन्नत किस्मों से बढ़ेगी किसानों की उपज और आय

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। किसानों की उपज और आय बढ़ाने के लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) ने दाना मटर की दो उन्नत किस्मों के उत्पादन और बिक्री का रास्ता खोल दिया है।

विश्वविद्यालय ने एचएफपी-1426 और एचएफपी-1709 किस्मों के लिए असम की निजी कंपनी मैजेस्टिक इम्पेक्स, गुवाहाटी के साथ समझौता किया है। इन किस्मों की खासियत अधिक उत्पादन क्षमता, रोग प्रतिरोधकता और कम समय में पककर तैयार होना है।

कुलपति प्रो. बलदेव राज कांबोज ने कहा कि उन्नत किस्मों के बीजों की बुवाई से किसानों की उत्पादकता और आय में वृद्धि होगी। विकसित किस्मों के बीजों की देशभर में बढ़ती मांग के चलते निजी कंपनियां भी इनके उत्पादन और बिक्री में रुचि दिखा रही हैं। समझौता ज्ञापन पर कंपनी की ओर से एग्जीक्यूटिव मेंबर नीरज अग्रवाल और विश्वविद्यालय की ओर से अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने हस्ताक्षर किए।



कुलपति प्रो. बीआर कांबोज के साथ कंपनी प्रतिनिधि व अधिकारी। स्रोत : संस्थान

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि एचएफपी-1426 उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र के लिए विकसित अधिक उपज देने वाली किस्म है। यह 120 से 122 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसके पौधों की ऊंचाई लगभग 62 सेंटीमीटर है। इससे फसल के गिरने की आशंका कम रहती है। रबी मौसम में सामान्य समय पर बुवाई और सिंचित परिस्थितियों में अनुशंसित कृषि पद्धतियों के तहत इसकी खेती की जा सकती है।

मांग में देशभर में पहले स्थान पर एचएफपी-1709

मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. नरेश कौशिक ने बताया कि एचएफपी-1709 ने विमोचन के पहले वर्ष में ही किसानों के बीच लोकप्रियता हासिल की है। रबी 2026-27 के राष्ट्रीय डीएसी-बीएसपी बीज मांग-पत्र (इंडेंट) में 133.88 क्विंटल मांग के साथ इस किस्म ने देश में पहला स्थान प्राप्त किया है। यह किस्म 112 से 115 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। पौधों की ऊंचाई 53 से 63 सेंटीमीटर होने के कारण फसल गिरने की आशंका कम रहती है। यह भी रोग प्रतिरोधी और फलियों के चटकने से सुरक्षित है। इसकी औसत उपज लगभग 17 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है, जबकि अधिकतम संभावित उपज 30 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार,
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	12.11.26	4	2-6

दाना मटर की दो उन्नत किस्मों के लिए हकृवि का कंपनी से समझौता

जागरण संवाददाता • हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की जा रही उन्नत किस्मों के बीजों की मांग देशभर में लगातार बढ़ रही है। इन किस्मों के बीजों की बढ़ती मांग को देखते हुए निजी क्षेत्र की कंपनियां भी विश्वविद्यालय के साथ समझौते कर रही हैं। इसी कड़ी में मैजेस्टिक इम्पेक्स गुवाहाटी (असम) ने दाना मटर की दो उन्नत किस्मों एचएफपी-1426 और एचएफपी-1709 के उत्पादन एवं बिक्री के लिए विश्वविद्यालय के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने बताया कि उन्नत किस्मों के बीजों की बुवाई से किसानों की उत्पादकता और आय में वृद्धि होगी। मैजेस्टिक इम्पेक्स गुवाहाटी के एग्जीक्यूटिव मेंबर नीरज अग्रवाल तथा विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डा. राजबीर गर्ग ने समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।



समझौता कार्यक्रम के दौरान कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज के साथ कंपनी के प्रतिनिधि व अधिकारी।

इस अवसर पर ओएसडी डा. अतुल ढींगड़ा, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. रमेश गोयल, डा. एसके पाहुजा, डा. एसके तेहलान, मीडिया एडवाइजर डा. संदीप आर्य, डा. विरेन्द्र मोर, डा. योगेश जिंदल, डा. अनुराग व डा. पवन उपस्थित रहे।

एचएफपी-1426 की खासियत : अनुसंधान निदेशक डा. राजबीर गर्ग ने बताया कि एचएफपी-1426 दाना मटर की अधिक उपज देने वाली, रोग प्रतिरोधी और शीघ्र पकने वाली उन्नत किस्म है। यह उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र की परिस्थितियों में 120 से 122 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसके पौधों की ऊंचाई लगभग 62 सेंटीमीटर होने के कारण फसल के गिरने की आशंका कम रहती है। इसके अतिरिक्त, यह किस्म फलियों के चटकने के प्रति भी प्रतिरोधी है। यह किस्म उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र में रबी मौसम के दौरान सामान्य समय पर बुवाई के लिए तथा सिंचित परिस्थितियों में अनुशंसित कृषि पद्धतियों के अनुसार खेती के लिए उपयुक्त है। इसकी औसत उपज 17 से 18 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है, जबकि अनुकूल परिस्थितियों और उचित फसल प्रबंधन के अंतर्गत इसकी अधिकतम उपज क्षमता 28 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक है।

एचएफपी-1709 की विशेषता

मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डा. नरेश कौशिक ने बताया कि विमोचन के प्रथम वर्ष में ही एचएफपी 1709 ने किसानों के बीच लोकप्रियता हासिल की और रबी 2026-27 के लिए राष्ट्रीय डीएसी-बीएसपी बीज मांग-पत्र (इंडेंट) में 133.88 क्विंटल की मांग के साथ देश में प्रथम स्थान प्राप्त किया। एचएफपी-1709 उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र के लिए विकसित दाना मटर की अधिक उपज देने वाली, रोग प्रतिरोधी और शीघ्र पकने वाली उन्नत किस्म है। यह 112 से 115 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसके पौधों की ऊंचाई लगभग 53 से 63 सेंटीमीटर होने के कारण फसल के गिरने की आशंका कम रहती है। यह किस्म भी फलियों के चटकने के प्रति प्रतिरोधी है। यह किस्म रबी मौसम के दौरान सामान्य समय पर बुवाई तथा सिंचित परिस्थितियों में अनुशंसित कृषि पद्धतियों के अनुसार खेती के लिए उपयुक्त है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार,
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	12-11-26	12	3-6

एचएफपी-1426 व एचएफपी-1709 किस्मों के बीज देशभर में होंगे उपलब्ध

हकृवि की दाना मटर की दो उन्नत किस्मों के उत्पादन-बिक्री के लिए निजी कंपनी से करार

हरिभूमि न्यूज ⏭ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हकृवि) की ओर से विकसित दाना मटर की दो उन्नत किस्मों एचएफपी-1426 और एचएफपी-1709 के बीज अब निजी कंपनी के माध्यम से किसानों को उपलब्ध करवाए जाएंगे। इनके उत्पादन और बिक्री के लिए गुवाहाटी (असम) की मैजेस्टिक इम्पेक्स कंपनी ने विश्वविद्यालय के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। इससे इन किस्मों के बीजों का उत्पादन बढ़ने के साथ किसानों तक इनकी पहुंच आसान होगी। कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज ने बताया कि विश्वविद्यालय की उन्नत किस्मों के बीजों की मांग देशभर में बढ़ रही है। किसानों की उत्पादकता और आय में वृद्धि के साथ देश में खाद्यान्न उत्पादन बढ़ाने के उद्देश्य से निजी कंपनियों के साथ समझौते किए जा रहे हैं। समझौता ज्ञापन पर कंपनी के एग्जीक्यूटिव मेंबर नीरज अग्रवाल और विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने हस्ताक्षर किए।

- एचएफपी-1709 की राष्ट्रीय बीज मांग में रही पहली रैंक



112 से 122 दिन में तैयार होंगी दोनों किस्में

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि एचएफपी-1426 अधिक उपज देने वाली, रोग प्रतिरोधी और शीघ्र पकने वाली किस्म है। यह 120 से 122 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। पौधों की ऊंचाई लगभग 62 सेंटीमीटर होने के कारण फसल गिरने की आशंका कम रहती है। इसकी फलियां भी चटकती नहीं हैं। इसकी औसत उपज 17 से 18 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है, जबकि अनुकूल परिस्थितियों में 28 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक उत्पादन लिया जा सकता है। वहीं, एचएफपी-1709 ने विमोचन के पहले वर्ष में ही किसानों के बीच लोकप्रियता हासिल की है। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. नरेश कौशिक ने बताया कि रबी 2026-27 के लिए राष्ट्रीय डीएसी-बीएसपी बीज मांग-पत्र में इस किस्म की 133.88 क्विंटल मांग दर्ज की गई, जो देश में सर्वाधिक रही। यह किस्म 112 से 115 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसके पौधों की ऊंचाई 53 से 63 सेंटीमीटर होने से फसल गिरने का खतरा कम रहता है। यह भी रोग प्रतिरोधी और फलियों के चटकने के प्रति प्रतिरोधी है। इसकी औसत उपज 17 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तथा अधिकतम संभावित उपज 30 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। दोनों किस्में उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र में रबी मौसम के दौरान सामान्य समय पर बुवाई और सिंचित परिस्थितियों में खेती के लिए उपयुक्त हैं। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. रमेश गोयल, डॉ. एसके पाहुजा, डॉ. एसके तेहलान आदि थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	12-11-26	5	1-4

दाना मटर की दो उन्नत किस्मों के उत्पादन एवं बिक्री के लिए निजी कंपनी ने हकृवि से किया समझौता

हिसार, 11 नवम्बर (विरेंद्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की जा रही उन्नत किस्मों के बीजों की मांग देशभर में लगातार बढ़ रही है। इन किस्मों के बीजों की बढ़ती मांग को देखते हुए निजी क्षेत्र की कंपनियां भी विश्वविद्यालय के साथ समझौते कर रही हैं। इसी कड़ी में मैजेस्टिक इम्पेक्स, गुवाहाटी (असम) ने दाना मटर की दो उन्नत किस्मों एचएफपी-1426 और एचएफपी-1709 के उत्पादन एवं बिक्री के लिए विश्वविद्यालय के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। यह जानकारी देते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने बताया कि उन्नत किस्मों के बीजों की बुवाई से किसानों की उत्पादकता और आय में वृद्धि होगी। देश में खाद्यान्न उत्पादन बढ़ाने और किसानों को बेहतर बीज उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से निजी क्षेत्र की कंपनियों के साथ निरंतर समझौता ज्ञापन किए जा रहे हैं। मैजेस्टिक इम्पेक्स, गुवाहाटी के एग्जीक्यूटिव मेंबर नीरज अग्रवाल तथा विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।



कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के साथ कंपनी प्रतिनिधि व अधिकारी।

एचएफपी-1426 की खासियत: अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि एचएफपी-1426 दाना मटर की अधिक उपज देने वाली, रोग प्रतिरोधी और शीघ्र पकने वाली उन्नत किस्म है। यह उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र की परिस्थितियों में 120 से 122 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसके पौधों की ऊंचाई लगभग 62 सेंटीमीटर होने के कारण फसल के गिरने की आशंका कम रहती है। इसके अतिरिक्त, यह किस्म फलियों के चटकने के प्रति भी प्रतिरोधी है। यह किस्म उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र में रबी मौसम के दौरान सामान्य समय पर बुवाई के लिए तथा सिंचित परिस्थितियों में अनुशंसित कृषि पद्धतियों के अनुसार खेती के लिए उपयुक्त है। इसकी औसत उपज 17 से 18 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है, जबकि अनुकूल परिस्थितियों और उचित फसल प्रबंधन के अंतर्गत इसकी अधिकतम उपज क्षमता 28 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक है। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. रमेश गोयल, डॉ. एसके पाहुजा, डॉ. एसके तेहलान, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, डॉ. विरेन्द्र मोर, डॉ. योगेश जिंदल, डॉ. अनुराग व डॉ. पवन उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हि
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	क
हरियाणा मेल	12-11-26	7	7

एचएयू में विकसित हरे मटर का बीज अब देशभर में मिलेगा

हरियाणा मेल, एजेंसी



हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हकृवि) की ओर से विकसित दाना मटर की दो उन्नत किस्मों एचएफपी-1426 और एचएफपी-1709 के बीज अब निजी कंपनी के माध्यम से किसानों को उपलब्ध करवाए जाएंगे। इनके उत्पादन और बिक्री के लिए गुवाहाटी (असम) की मैजेस्टिक इम्पेक्स कंपनी ने विश्वविद्यालय के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। इससे इन किस्मों के बीजों का उत्पादन बढ़ने के साथ किसानों तक इनकी पहुंच आसान होगी।

कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज ने बुधवार को बताया कि विश्वविद्यालय की उन्नत किस्मों के बीजों की मांग देशभर में बढ़ रही है। किसानों की उत्पादकता और आय में वृद्धि के साथ देश में खाद्यान्न उत्पादन बढ़ाने के उद्देश्य से निजी कंपनियों के साथ समझौते किए जा रहे हैं।

समझौता ज्ञापन पर कंपनी के एग्जीक्यूटिव मेंबर नीरज अग्रवाल और विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने हस्ताक्षर किए। 112 से 122 दिन में तैयार होंगी दोनों किस्में अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि एचएफपी-1426 अधिक उपज देने वाली, रोग प्रतिरोधी और शीघ्र पकने वाली किस्म है। यह 120 से 122 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। पौधों की ऊंचाई लगभग 62 सेंटीमीटर होने के कारण फसल गिरने की आशंका कम रहती है। इसकी फलियां भी चटकती नहीं हैं। इसकी औसत उपज 17 से 18 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।